Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -II. PAPER-III

मन के पहलू: मन का आकारात्मक पहलू (ASPECT OF MIND: TOPOGRAPHICAL ASPECTS OF MIND)

मन के आकारात्मक पहलू का तात्पर्य मन के उस भाग से है जहां गत्यात्मक शक्तियां(dynamic forces) अर्थात इड, ईगो तथा सुपर ईगो अवस्थित होते हैं।***फ्रायड(Frieud)*** ने मन के दो पहलूओं को बारे में बतलाया है। पहला, मन का गत्यात्मक पहलू: जिसमें इड, ईगो और सुपर ईगो आते हैं तथा दूसरा, मन का आकारात्मक पहलू।***फ्रायड(Frieud)*** के अनुसार मन(mind), आत्मन(self) या व्यक्तित्व(personality) के आकारात्मक पहलू के निम्नलिखित तीन भाग हैं-

१) चेतन (conscious)
२) अर्धचेतन (subconscious)
३) अचेतन (unconscious)

१) चेतन (conscious) - चेतन आकारात्मक मन (topographical mind) का वह भाग है जिसमें ऐसी इच्छाएं या विचार रहते हैं, जिनका तत्कालिक बोध(immediate awareness) व्यक्ति को रहता है। किसी दिए हुए विशेष क्षण में व्यक्ति के मानसिक पटल पर जो विचार या इच्छाएं उत्पन्न होती है, वह चेतन होता है।मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत में चेतन का तात्पर्य मन के उस पक्ष से है, जिसमें वे सारे विचार एक साथ उपस्थित होते हैं जिनकी जानकारी व्यक्ति को उस समय विशेष (क्षणमात्र) में होती है। जैसे- एक परीक्षार्थी परीक्षा भवन में जब किसी प्रश्न का उत्तर लिखता है तो उसे उस समय उस उत्तर से संबंधित सारी बातों की जानकारी तो रहती ही है साथ ही वहां उपस्थित बहुत सारे उद्दीपकों को भी अपनी चेतना में रखता है जिससे वह प्रभावित होता है।चेतन मन में नैतिक अनैतिक सामाजिक असामाजिक कामों पर काम वितरक इच्छाएं उत्पन्न हो सकती है प्रति बंधन अधिक कठोर होता है जिससे इस स्तर पर अनैतिक तथा काफी कठिनाई होती है चेतन मन का छोटा भाग है, जो कुल मन का लगभग 10% होता है।

२) अर्धचेतन (subconscious) - अर्धचेतन, आकारात्मक मन का दूसरा एवं सबसे छोटा भाग है। इसे अवचेतन, प्राकचेतन, वर्णनात्मक अचेतन, आदि नामों से भी जाना जाता है।इसमें ऐसी इच्छाएं या विचार रहते हैं, जिनकी जानकारी व्यक्ति को तात्कालिक नहीं होती है किंतु थोड़े प्रयास से यह जानकारी संभव हो जाती है। जैसे- परीक्षा भवन में किसी प्रश्न का उत्तर लिखते समय जब परीक्षार्थी उस प्रश्न के उत्तर से संबंधित किसी तथ्यों को भूल गया होता है तो वह थोड़ा प्रयास करके वह उन तथ्यों को फिर से अपने स्मृति में ला पाता है।

३) अचेतन (unconscious) - चेतन आकारात्मक मन का तीसरा तथा सबसे बृहत भाग है। इस भाग में ऐसी इच्छाएं या विचार रहते हैं जिनकी जानकारी व्यक्ति को न तो वर्तमान समय में होती है और ना ही प्रयास करने से संभव हो पाती है, बल्कि यह जानकारी कुछ विशेष मनोवैज्ञानिक प्रविधियां जैसे सम्मोहन,मनोविश्लेषण, दैनिक जीवन की कुछ असामान्य प्रक्रियाएं, स्वप्न,इत्यादि से संभव हो पाती है।वास्तव में अचेतन मन में ऐसी अर्जित सामग्रियां रहती है जिनका प्रत्याह्वान इच्छानुसार नहीं किया जा सकता है, बल्कि वे स्वयं या किसी मनोवैज्ञानिक प्रविधियों के द्वारा ही घटित हो पाती है।अचेतन में ऐसी इच्छाएं दमित होती हैं जो अनैतिक, कामुक तथा असामाजिक होती हैं। इन्हें अचेतन प्रेरणा या अचेतन संगठक कहते हैं।ये इच्छाएं पहले चेतन में होती है। जब उन इच्छाओं की संतुष्टि चेतन स्तर पर सामाजिक एवं नैतिक प्रतिबंधों के कारण नहीं हो पाती है तो वे अचेतन में

दमित हो जाती हैं। अचेतन के संघटको (विचारों एवं इच्छाओं) की अभिव्यक्ति या संतुष्टि अप्रत्यक्ष रूप से होती है। जैसे - दैनिक जीवन की भूलें, स्वपनों, इत्यादि के रूप में उनकी अभिव्यक्ति एवं संतुष्टि होती है।

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मन के आकारात्मक पहलू के इन तीनों भागों को जल से भरे उस पात्र से तुलना की जा सकती है जिसमें एक बर्फ का टुकड़ा होता है। बर्फ का लगभग 90% हिस्सा पानी में डूबा होता है जबकि लगभग 10% हिस्सा पानी से ऊपर तैरता है। पानी की सतह के नीचे बर्फ का कुछ हिस्सा ऊपर से दिखलाई पड़ता है। यहां जल से भरा पात्र मन के समान है। पानी की सतह से ऊपर तैरता हुआ बर्फ का हिस्सा चेतन है और पानी के नीचे डूबा हुआ बर्फ का बड़ा हिस्सा अचेतन है जबकि सतह के नीचे, ऊपर से दिख रहा बर्फ का अर्धपारदर्शी भाग अचेतन के समान है।

दूसरे उदाहरण में मन के आकारात्मक पहलू के इन तीनों भागों की तुलना एक अर्धपारदर्शी पर्दे से की जा सकती है। जिसके इस तरफ पूरा दिखने वाला भाग चेतन हैं और पर्दे के उस पार हल्का पारदर्शी दिखने वाला भाग अवचेतन है। जबकि पर्दे के उस पार का बृहत भाग जो अंधकारमय है, उसे अचेतन के रूप में समझ सकते हैं।

24/07/2020. **-. Sanjay Kumar.**